॥ श्री गणेशाय नमः ॥

卐 अग्रवाल मेरेज गाईड 卐

विवाह संबधी जानकारी

विवाह रीति रिवाज का सम्पूर्ण संकलन
एवं बच्चे का जन्म व नेगचार

टीकमचन्द नागरमल अग्रवाल (कन्दोई)

2, अश्वराज बंगलो, कोर्पोरेट रोड, 100 फीट रींग रोड,
प्रहलादनगर औडा गार्डन के पास, अहमदाबाद-380015.
मो. 94264 87264, *WWW.ASHIRWADGROUP.NET*
E-mail : tckandoi@gmail.com, tc@ashirwadgroup.net

अग्रवाल मेरेज गाईड पुस्तिका आपको देते हुए बडा ही हर्ष हो रहा है।यह पुस्तिका प्रबंधकों के गहन परिश्रम का परिणाम है। इसमें हमारा पुरा प्रयास रहा है कि विवाह संबधित सभी जानकारियां आपको सिलसिलेवार मिले, उसके अनुसार तैयार करके आप विवाह की सभी चिंताओ से मुक्त होकर विवाह का पुरा आनंद उठा सकें।

विवाह मानव जीवन की महत्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था है जो विशेष सामाजिक तथा सांस्कृतिक नियमों के अन्तर्गत बच्चों के जन्म और पालन-पोषण की ही व्यवस्था नहीं करती बल्कि एक पीढी से दूसरी पीढी को सांस्कृतिक विशेषताओं का संचरण करने के लिए भी दृढ आधार तैयार करती है। इसलिए संसार के प्रत्येक समाज में विवाह रुपी व्यवस्था पाई जाती है।

हिन्दू संस्कृति में विवाह अन्य संस्कृतियों से भिन्न है। जहां मुस्लिम-ईसाई संस्कृति में यह एक समझौता है। वही हिन्दू संस्कृति में विवाह एक संस्कार है। संस्कार धार्मिक विधि है जो व्यक्ति को एक विशेष स्थिति में उसके कर्तव्यों का बोध कराती है।

अपने इसी स्वरुप के कारण हिन्दुओं में पति-पत्नि-जीवन पर्यन्त एक दूसरे के साथ रहने की शपथ लेते हैं। वे अग्नि व अनेक दूसरे देवी-देवताओं को साक्षी मानकर एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने का वचन देते है। इसी माध्यम से अन्न, धन, सुख, सन्तान, बल और पारस्परिक निष्ठा की कामना की जाती है। हमारी संस्कृति में विवाह का यही मूल स्वरुप है।

यह पुस्तक आपको अवश्य ही पसंद आई होगी। कोई सुझाव हो तो सुचित करें। ताकि आगे के मुद्रण में सुधारा किया जा सके।

इस पुस्तक के संकलन / एवं प्रकाशन में **श्री शीवकुमारजी शास्त्री, श्री श्रीरामजी डीडवाणीया** का तहदिल से आभारी हूं जिन्होने अपने व्यस्त कार्यक्रम मे से समय निकालकर इस किताब को ईतना अच्छा प्रारुप दिया।

टीकमचन्द अग्रवाल

कार्यक्रम का दिनांक एवं समय

विवाह दिनांक

क्र.सं.		दिनांक	समय
१	लड़का/लड़की सगाई का नेग		
२	विवाह हाथ लेना		
३	तिलक/पुरुषो की मिलनी		
४	चिकनी कोथली		
५	गीत सम्मेलन		
६	औरतों की मिलनी		
७	मेल/प्रितिभोज		
८	भात नूतना		
९	हल्दहाथ		
१०	तेलबान		
११	चिकनी कोथली		
१२	बेल		
१३	कुंवारा मांडा		
१४	भात भरना		
१५	कोरथ एंव निकासी		
१६	ढूकाव - वरमाला		
१७	दात-घरवा		
१८	रिसेप्सन		
१९	फेरा		
२०	सिरगूँथी -जूआ		
२१	गोद-भराई		
२२	सज्जनगोठ		
२३	पहरावनी - फेर-पाटा		
२४	विदाई		
२५	देवी देवता पूजन		
२६	पूठ मोढा		

अनुमानित बजट

तिलक के पहले		
कार्ड-निमंत्रण पत्रिका		
नगदी/आभुषण पहले नेग पर		
मिठाई आदि पहले नेग पर		
नगदी/आभुषण सगाई (मुद्दा) वाले दिन		
लड़का लड़की (सगाई) के नेग पर नगदी		
आभूषण लड़का लड़की		
लडडू मेवा फल शुट का कपडा, कोस्टेमटीक, दाढी का सामान		
वर कन्या के कपडे अन्य सामान		
मुद्दा-बहन/बेटियाँ व सास का /चांदी समान		
तिलक के लडडू या अन्य सामान		
तिलक मे नगदी		
नाश्ता आदि सगाई/मुद्दा वाले दिन		
मिठाई/फल/चाट आदि शादी तक		
औरतों की बडी मिलनी		
विवाह में		
रिसेप्शन		
सामान		
केटरर		
हलवाई		
जगह (धर्मशाला भवन या अन्य)		
आनेवालों के रहने-खाने की व्यवस्था		
डेकोरेटर, लाईट जनरेटर, बैन्ड बाजा		
गाडी सजानी, घोडी सजानी		

फूलमाला/वरमाला		
बर्तन आदि		
दात - घरवा		
तीळ-२		
सात तीळ का रुपया, १६ ब्लाउज पीस, रुपया		
टंकी-२, टिफिनदान-१ सगा-सगी-या राधा-कृष्ण की मूर्ति		
पापड, मंगोडी, लडडु, माठी, अन्य सामान		
फेरा, वर की तरफ से डाला लाना		
फेरा-सामान, पूजा का सामान, वधु पक्ष की तरफ से		
कन्यादान का सामान		
पण्डित		
सिर गूंथी - औरतो की मिलनी		
पहरावनी		
कंठी, अंगूठी, घड़ी, दुसालो, चौकी गलीचो १ - सबन्धी वर के तिलक करते है दोनो पक्ष अपने अपने जंवाई को तिलक करते हैं ।		
चुनरी / कचोळा / नगदी / अन्य		
फर्नीचर		
मुकलावा, बेटी के लिए / सास के लिए		
जेवर		
चांदी सामान		
अन्य खर्चे (सामान)		
सामान की लिस्ट		
फोटो विडीयो व कोरीयोग्राफर		
गाडी भाड़ा		

नोकर	बक्शीश	
चोका खर्च (रसोई)	भात नूतना - मिठाई/कपड़े	
मिलनी	बहन/बेटियां/मां का नेग	
काजळ धलाई	आरता	
लूण - राई	बाग गुंथाई	
बाड रुकाई	विवाहोपलक्ष में अन्य खर्चे	
शादी के उपलक्ष में	जंवाइयो को / बेटीयों को	
पेंचा बंधाई	धुडचढ़ी	
तिलक	घर के सदस्यो के कपडे चौका खर्च	
मूख वास	फल मेवा	
चाय नास्ता		

साहजी से कार्यक्रम निश्चित करना

- लड़का-लड़की के आने जाने का नेग
  लड़की के जाने का समय   लड़के के आने का समय
- मुददा का समय   कितनी बहन/बेटियां आयेगी
  सामान कितनी जगह – क्या ?   सास का सामान / वर का सामान
- औरतों की बडी कितनी मिलनी / तथा वर को वधु की
  मां गोद मे बैठाकर नेग
  अन्दाज कितनी जगह क्या ?
- तिलक की तिथि – स्थान – समय – संख्या
- विवाह की तिथी - स्थान – समय
- कोरथ का समय - स्थान
- बारात का समय - स्थान
- बारातीयों की संख्या
- रिसेप्सन में संख्या
- रिसेप्सन आइटम
  ठण्डा-गरम-हाईटी-बुफे
- बैठाकर सज्जनगोठ कितने आदमी
  पातल की मिठाई, खाना बर्तन में या क्रोकरी में
  परोसा कितनी जगह – कितने आदमियों का
- फेरा का समय
- कार्ड में नाम पता लेकर फाईनल करना

१) सम्बन्ध निश्चित करना :

जब लड़का-लड़की विवाह योग्य हो जाते हैं। तब मां-बाप सम्बन्ध के लिए प्रयास चालू करते हैं। सगौत्रमें शादियां वर्जित हैं। सम्बन्ध समान स्तरमें होने वाले ही प्राय: सफल होते हैं। बहुत से मां-बाप मांगलिक आदि के चक्कुर में बहुत समय निकाल देते हैं एवं अच्छे सम्बन्ध हाथ से निकल जातें है। और अंत में जैसा मिलता है वैसा ही सम्बन्ध करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।अत: शुरु में ही मांगलिक आदि का चक्कुर छोड कर अच्छा सम्बन्ध देख कर तय कर लेना चाहिए।

२) लडका-लडकी सगाई – रींग सेरेमनी

पंडितजी से अच्छा मुहूर्त निकलवाकर समय व जगह निश्चित की जाती है। दोनों पक्ष अपने भाईबंधु, रिश्तेदारों सहित सभी को बुलाते हैं। वरपक्ष के बुजुर्ग वधु को टीका करके गहना, कपड़ा, नकद देकर उसे अपने परिवार में शामिल करने की मंजुरी देते हैं।

वधुपक्ष पांच प्रकार का मेवा (एक डलिया में सजाकर) नगदी, कपड़ा, गहना, फल-मिठाई देकर वर का झोला भरते हैं। इस समय तिलक नहीं होता। लड़का-लड़की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच में एक दूसरे को रींग पहनाते हैं। इस समय मिलाई भी दी जाती है। बड़ो के धोक (पांव छुकर) खाकर आशीर्वाद लेते हैं। भोज के साथ समारोह समाप्त होता है।

व्यवस्थाए

बुलाने के लिए यातायात की व्यवस्था
बैठाने की व्यवस्था
शर्बत आदि की व्यवस्था
बर्तन आदि की व्यवस्था
नाश्ते की व्यवस्था
पान आदि की व्यवस्था
तिलक का सामान / नारियल / रुपया
माला-२, रिंग - १
अन्य सामान साथ में आये हुओं को लिफाफो में भेट
नाश्ता/फोटोग्राफर/विडीयो की व्यवस्था
ड्राईवर आया हो तो उसे भेंट / नास्ता देना

कन्यापक्ष वालों के लिए अत्तिरिक्त व्यवस्थाएं
लड्डु का थाल - फलों का थाल
मेवा का थाल - वर के कपडे व अन्य सामान
पोदीना - वरपक्ष वालों के लिए अतिरिक्त व्यवस्थाएं
कन्या के कपडे व अन्य सामान - रिंग १

नोट : अगर कोई सामान पैकिंग करवाना हो तो पहले तैयार करवा लेना चाहिए . लड़की वालों के लिए - लड़की को बुलाने साधारणत : २/३ लोग ही आते है इनके नाश्ते आदि की व्यवस्था अलग से कर लेनी चाहिये।

३. मिलाई

“मिलाई” सम्मान का धौतक है। कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष के बड़े को सम्मान के रुपमें चार रुपया दिया जाता है इसे मिलाई कहते हैं। राज घरानों में पुराने समय में राजा महाराजा से मिलने जाने वाला राजा को कुछ भेंट देता था उसी की यह अभिव्यक्ति है।

मिलाई सम्बन्ध के मामले में एक सशक्त भूमिका निभाती है। यदि वर-पक्ष कन्या पक्ष से मिलाई स्वीकार कर लेता है तो लड़के लड़की का सम्बन्ध पक्का मान लिया जाता है।

लड़के-लड़की को देखने के बाद दोनों पक्ष सम्बन्ध के लिए तैयार हो जाते हैं। तब मिलाई दी जाती है। उसके बाद लड़की के परिवार में अथवा वर के परिवार में शुभ प्रसंगों के अवसर पर मिलाई दी जाती है। मलमास वगेरह में भी लड़के लड़की को देखने के बाद अच्छा दिन (लग्न) नहीं होने से नेग नहीं किया जा सकता उस समय भी मिलाई देकर सम्बन्ध पक्का कर लिया जाता है।

मिलाई देने के अवसर

(१) नेग के समय (२) अंगुठी रस्म (रींग सेरेमनी) के समय
(३) टीका (मुद्दा) के समय (४) कोरथ के समय
(५) विदाई के समय (६) त्यौहार पर

४. औरतों की मिलनी

कन्या पक्ष की औरतें वर पक्ष की औरतों को मिलनी देने वर पक्ष के यहां जाती है।

कन्या पक्ष वालों के यहां व्यवस्था	वर पक्ष वालों के यहां व्यवस्था
यातायात / व्यवस्था	अत्थियों को बैठाने की व्यवस्था
मिलनी के रुपये/लिफाफे	चाय, नास्ता, ठण्डा की व्यवस्था
	पान/सुपारी आदि की व्यवस्था

नोट : कन्या पक्ष से जिन्हे मिलनी दिलवानी हो – दिलवाना।

५. भात नूतना (भात भरने का न्यौता)

वर और कन्या की माँ विवाह पुर्व अपने अपने पीहर में भात न्योतती है अर्थात भात भरने आने का न्यौता /आमंत्रण देती है। इस अवसर पर सारे परिवार वाले सम्मिलित होते हैं एवं सभी का भोजन होता है।

वर और कन्या पक्ष के यहाँ व्यवस्था	वर/कन्या की माँ के पीहर वालों के यहां व्यवस्था
प्रचलित रस्म के मुताबिक आमंत्रण	बिछात की व्यवस्था
यातायात व्यवस्था	चाय ठण्डा की व्यवस्था
भाईयों के कपडे एवं बच्चों के जोड़े	भोजन व्यवस्था
लडडू/मिठाई आदि	पान/सुपारी आदि की व्यवस्था
आरता की थाली/नारियल	

६. विवाह हाथ/गणेश पुजा

विवाह हाथ लेकर शादी के कार्य का श्री गणेश किया जाता है। इस अवसर पर वर एवं कन्या दोनों पक्षों में शादी के मांगलिक गीत गाये जाते है। कन्या पक्ष के यहां मंगोडी चूंटी जाती है एवं वर पक्ष के यहां नाल ताना जाता है।मिश्राणीयों को व्याह हाथ का नेग दिया जाता है। रुपया रेजगारी की थैली की भी पूजा की जाती है।

७. तिलक/कचोला का नेग-चिकनी कोथली का नेग-रात को रातुजुगा

कन्या पक्ष वाले वर का तिलक करने वर के यहां जाते है।

<u>कन्यापक्ष वालों के यहां व्यवस्था</u>

आगत भाईयों/सम्बन्धियों को बैठाने की व्यवस्था
चाय/ठण्डा की व्यवस्था
पान/सुपारी आदि की व्यवस्था
पोदीने का थाल/डगरा सजाकर
नारियल सजाकर

<u>वरपक्ष के यहां व्यवस्था</u>

कार्ड या अन्य व्यवहारिक तरीके से आमंत्रण
जगह की व्यवस्था पण्डित की व्यवस्था
अतिथियों के बैठने की व्यवस्था
वर के लिए गद्दी, गलीचा, मसण्ड की व्यवस्था
चाय/ठण्डा की व्यवस्था
पान/सुपारी आदि की व्यवस्था
फोटोग्राफर/विडियो आदी की व्यवस्था

तिलक में देने की भेंट — सजाकर
पुष्प, माला, सुपारी, पान, रोली, मोली,
चावल, दुर्व्वा,फल,खुदरा रुपया
रेजगारी, पाणी की घण्टी आदि मिलनी
माला - वर के लिये
मिलनी के रुपये/लिफाफे

कचोळा १, वर पक्ष की बहन बेटी चिकनी कोथळी का सामान के साथ मेवा या ४ लड्डु भरकर कचोळा दिखाती है। लड़की वाले नेग देते है।

वर पक्ष कन्या पक्ष के यहां चिकनी कोथली का नेग भेजता है जिसमें मुख्यतः कन्या की साडीयाँ एवम् सुहाग भाग की सारी चीजें होती हैं, एवं कन्या पक्ष चिकनी कोथली का नेग देता है। नोट : यहां रस्म सगाई के नेग के साथ भी की जा सकती है।

वर पक्ष की बहन / बेटियां कन्या पक्ष वालों के यहाँ जाकर कन्या को साड़ी ओढ़ना उठाती है। कन्या की मेवा से गोद भरते है। कन्या पक्ष वाले आगत बहन / बेटियों को जलपान आदि करवाकर टीका का नेग देते हैं।

रात में रातीजुगा करते हैं।

८. प्रीतीभोज/मेल

तिलक के बाद वर पक्ष वाले आने वाले मेहमानों को भोजन करवाते हैं उसे प्रीतीभोज/मेल कहते है। इसमें अपने सभी रिस्तेदार, करीबी दोस्त, स्वजन मित्र व कन्या पक्ष वालो सहीत सभी को आंमत्रित किया जाता है।

९. हल्दात

इसे हल्दी हाथ या पीले हाथ भी कहते है। इस अवसर पर श्री गणेश पूजन कर मांगलिक गीत गाये जाते है। यह रस्म दोनों पक्षों के यहां की जाती है। इसके साथ मुंगधना भी होता है - नाई या नौकर हरी डाली लाता है तथा पूजन होता है। गुड, धनिया, रोली-मोली, बाजरी की घुघरी होती है।

व्यवस्था

पूजा की थाली, पान, सुपारी, रोली, मोली, चावल, फल,
फुल, दुर्वा, पाणी की घंटी, रुपया, पैसा आदि।
ऊखल-मूसल (काठ का) लोहे की कुडछी-२ छाजला-१ हल्दी की गांठ
साबुत नमक, हँसली, मूदंडी (चांदी की) पीढा
मूंग दाल पीसी हुई (मंगोड़ी के लिए) ताला - चाबी सहित
परोत - एक प्लेट में मूंग/चावल/पैसा

नोट : हल्दहात के पश्चात बहन बेटी से आरता करवा कर नेग दिया जाता है एवं मिश्राणीयों को हल्दहात का नेग देते है।

१०. तेलबान

वर/कन्या से परिवार के बड़े लोग वर/कन्या को तेल चढ़ाते हैं। आजकल तेल चढ़ाना एवं उतारना एक दिन में भी किया जाता है। जो लोग तेल चढ़ाते हैं वे ही तेल उतारते हैं। वर/कन्या को चौक में चोकी पर बैठा कर सिर पर चन्दुआ करके ये रस्म की जाती है। चढ़ाने एवं उतारने के पश्चात वर/कन्या के माथे में पिता झोल डालते हैं (वर को दहीं का और कन्या को कच्चे दूध का) और माँ सिर मसलती है, इसके पश्चात पिट्ठी करके वर/कन्या स्नान कर चौकी पर खडे हो जाते है, तत्पश्चात मामा/भाई/चाचा-वर/कन्या के हाथमें रुपया देकर, गोद में लेकर चौकी से उतारते है।

व्यवस्था

तेल बान की थाली, साकड़ी राखी सराई, दुर्वा, दहीं, महेंदी, तेल, आटा
उबटन, रोली, चावल तिलक के लिए माथे का झोल चांदी का प्याला

११. कुंवारा माण्डा

वरपक्ष के पण्डित जी कन्या पक्ष वालों के निम्नलिखित सामान लेकर जाते हैं। कन्या पक्ष वाले पण्डित जी का तिलक कर दक्षिणा देते हैं।
ले जाने का सामान, लाल पीला कागज, लाल वस्त्र २ -१/२ मीटर,
नाल – ७, हिरमच (लाल मिट्टी), प्यावडी (पीली मिट्टी),
करवा (चीनी भरकर, एक रुपया रखकर, लाल कपड़ा बांध कर)
सुहाग पूडा

१२. भात भरना - लेना

वर एव कन्या दोनों पक्षों के यहाँ यह रस्म होती है। वर/कन्या के मामा अपनी बहन को चुनड़ी ओढाकर यह रस्म पूरी करते है। इस अवसर पर नाना का पूरा परिवार एवं वर/कन्या का पूरा परिवार एकत्रित होता है। मामा अपनी सामर्थ्य के मुताबिक चुनडी, गहने, कपड़े आदि भात में देते हैं, रस्म पूरी हो जाने के पश्चात भोजन होता है। जवाईयों के तिलक होता है। खाने में मुंग चावल बनते हैं।

व्यवस्था

पीढ़ा या चौकी बैठाने की व्यवस्था
चाय/ठण्डा की व्यवस्था
भोजन व्यवस्था (मूंग-भात)

पान, सुपारी आदी की व्यवस्था
तिलक के लिए नारियल, आरता की थाली
रुपया/लिफाफा शरबत का गिलास
फोटोग्राफर / विडियो की व्यवस्था

१३. चाक पूजना

यह रस्म दोनोपक्षों में ही होती है। इस रस्म में कुम्हार के चाक की पूजा होती है। परंतु आजकल मिक्सर की पूजा कर ली जाती है। बहन या भाभी बहार से दोगड़ (दो मटकी) लाती है। उसपर दूर्बा, मूंग, चावल रखा जाता है। एक प्रकार से यह विश्वकर्मा व जलाधिपति कुबेर की पूजा है। आजकल चकला ही पूज लेते हैं। और उसी पर सभी चीज चढा देते है।

१४. धरवा

कन्या पक्ष के यहां दात सजाने के पश्चात गणगौर की पूजा की जाती है – जिसे घरवा कहते है। धरवा की गणगौर मामा के धर की होती है। ये चांदी या मिट्टी की अपने सामर्थ्य के अनुसार दी जाती है। इसमें कन्या के वस्त्र, आभूषण आदि भी दिये जाते है।

१५. निकासी (कोरथ)

कन्या पक्षवाले वरपक्ष को बारात लेकर आने का आमंत्रण (पीली चिठ्ठी) कोरथ देने जाते है। आमंत्रण के पश्चात दुल्हे को तैयार कर घोड़ी की रस्म की जाती है उसे घुड़चढी या निकासी कहते है।

कन्यापक्ष के यहा व्यवस्था
यातायात व्यवस्था, मूंग (सवा किलो थाली या डगरे में) गुड की छोटी भेली मूंग पर रखकर, नारियल-१, फूल माला-१
पूजा की थाली-पूजन सामग्री के साथ
वर के तिलक के रुपये/लिफाफे
मिलनी के रुपये/लिफाफे

वरपक्ष के यहा व्यवस्था
आगत अतिथियों के बेठने की व्यवस्था
वर के बैठने के लिए गद्दी, गलीचा, मसण्ड
दुल्हा के कपडे – शेरवानी, पजामा पेंचा, किलंगी कंठा, कमरबन्द, तनी
छोटा नारियल, सेवरा, छत्तर
नेगो के रुपयों के लिफाफे पेंचा बंधाई
काजल धलाई, दूध पिलाने का नेग
आरता, नजर ऊतराई (लूण-राई)
छाती की नेग, बाल गुथाई
मिलनी के रुपये/लिफाफे

१६. बारात/डाला

निकासी का कार्य पूर्ण होने के बाद वर पक्ष कन्या पक्ष वालों के यहां बारात लेकर जाता है।

व्यवस्था :

वर के लिए सजी हुई गाड़ी/घोड़ी
अन्य बारातियों के लिए यातायात व्यवस्था
चीनी ओर एक रुपया थाली या डगरा में नीम की डाली
डाला-१ न्मिनिलिखि सामान के साथ
गठ जोड़ा का गुलाबी कपड़ा कमरबंद का लाल कपडा
४ मेवे की थैलियां (गोद भरने के लिए) नारियल १
सुहाग पिटारी - सेवरा, झालरा, गिलास, नाळ, तीळ, ब्यावली चूनडी
खिलौना, इत्र, केसर, सिन्दूर, धोती जोडा, कुर्ता टोपी, पेन्ट-शर्ट आदि

नोट : बहने वर के गाडी या घोड़ी पर बैठने के पश्चात बाल गुथाई का नेग करती है। छोटे बच्चे को घोडीपर वर के साथ बैठाया जाता है।

१७. ढुकाव-वरमाला

बारात जब कन्या पक्ष के यहां पहुंच जाती है उसे ढुकाव कहते है। बारात पहुँचने के पश्चात वर माला रस्म की जाती है।

व्यवस्था

बरमाला स्टेज, वरमाला-२, तोरण, फूल - न्योछावर के लिए
नीम की डाली, आरता की थाली, नारियल- सजा हुआ
करी - पानी पिलाने के लिए, चावल का लडडू

नोट : ढुकाव के पहले दुल्हन को तैयार कर लें। वरमाला के पश्चात दुल्हा-दुल्हन को फेरे प्रारम्भ होने तक बारातियों के मध्य बैठाने की व्यवस्था भी कर लेनी चाहिये।

१८. दात

वधूपक्ष वाले दात का सामान लग्न मण्डप के नीचे सजाकर रखते है।
नोट : फेरा बैठने के पश्चात ही सामान वर के जीजा/फुफा या अन्य द्वारा उठवाया जाता है। तत्पश्चात वरपक्ष के यहाँ भेज दिया जाता है।

व्यवस्था

दात सजाने के लिए चौकी – १
चद्दर – १ (चौकी पर बिछाने के लिए)
दात का सामान - तीळ – २
सात तीळों के रुपये (१०१/-७ – ७०७)
पापड/मंगोडी – टंकी में डालकर
मगद का लडड्डु(१७ या २१) माठी (१७ या २१)
टिफिनदान में मिठाई

सगा-सगी की या राधाकृष्ण की तस्वीर
१६ ब्लाउज पिस सजाकर

१९. रिसेप्सन (स्वागत)

बारातियों को बैठाने की व्यवस्था
सोफा, कुर्सी अन्य अपनी सुविधा के अनुसार स्वागत व्यवस्था
चाय/कोफी/ठन्डा बनाने वाले की व्यवस्था, नास्ते की व्यवस्था
भोजन/बुफे की व्यवस्था, सामान की लिस्ट लेनी
मीनू के बारे में अगर वर पक्ष से राय लेनी हो तो लेनी चाहिए
सामान की व्यवस्था

नोटः मीनू ४/५ कोपी करवा लेनी चाहिये ताकि जो भी व्यक्ति उस कार्य को देख रहा हो उसे दी जा सके।

भोजन वितरण (बुफे टेबल) का स्थान एवं बर्तन की व्यवस्था
पानी की व्यवस्था   कुल्फी या आइस्क्रीम व जूस के स्थान की व्यवस्था

२०. फेरा - लग्न मण्डप

चंवरी का स्थान एवं मण्डप बनाने वाले की व्यवस्था थाम्ब
मिट्टी एवं खाली टीना, वेदी के लिए मिट्टी, सिंहासन
थाम्ब पर बांधने का कपड़ा, फेरा सामग्री, डाला, हवन समीधा
वर व वधू पक्ष की पीढ़ी की सूची
कन्यादान की सामग्री, फेरा में लडकी का भाई खिली से आंजळा भरता है
थेली – रुपया/रेजगारी के साथ

नोट : कन्यादान करने वाले को इस दिन कन्यादान तक उपवास करना चाहिए। फेरा में साली बिन्द का जूता चूराती है, उसे नेग देकर वापस लीया जाता है।

२१. टूंटीयो

वरपक्ष की महिलाएं अपने आवास पर करती हैं। यह बहुत ही मनोरंजक होता है। इसमें तरह तरह के स्वांग करके हास्य की अभिव्यक्ति की जाती है।

२२. मुँह दिखवाई

कन्या के माता-पिता या कन्यादान करने वाले सप्तपदी (फेरा) तक उपवास करते है व फैरों से उठने के बाद कन्या के भाई, माता पिता कन्या का मुँह देखकर उसे भेंट नगद देते हैं। परिवार के बडे भी इस रस्म में शामिल होते है।

२३. गोद भराई

वरपक्ष वाले कन्या की गोद मेवा, गट (थैली में डालकर) एवं रुपयों से भरते है। ये रस्म चार बार होती है।

१.फेरो में   २. सिरगुंथी में

३. चुनड़ी ओढाते समय   ४ फेर पाटा के समय

२४. सिरगूंथी एंव जूआ

वरपक्ष की महिलायें वधू के केश संवारती/सजाती है । वधू पगालागनी का नेग करती है। वरपक्ष की महिलाओ को मिलनी दी जाती है। इसके पश्चात कहीं-कहीं आज भी जूआ खेलते है। इसमे वर को आखिर में जिताया जाता हैं एवं जूआ की अंगुठी वर वधू को पहनाता है। इस समय व्रपक्ष वाले कन्या से अपने जंवाई का रुपयों से आंजला भरवाते है।

२५. श्लोक

वर की बौधिक परीक्षा के लिए महिलायें थापा के सामने वर से श्लोक कहलाती है। तथा नगद भेट अंगूठी आदि देती है।

२६. सज्जन गोठ – सांख जलेबी

आजकल अधिकांश बाराती स्वरुचि भोज में भोजन कर लेते है। यह सज्जनगोठ बैठाकर की जाती है। इसमें दुल्हा, परिवार के बुजुर्ग, मामा एवं विशिष्ट व्यक्तियों को बैठाकर बडे ही आदर एवं सम्मान के साथ भोजन कराया जाता है। भोजन प्रारम्भ होने के पूर्व कन्यापक्ष के बुजुर्ग वरपक्ष के बुजुर्ग को अपने हाथों से जलेबी या मिठाई खिलाते है ।

एवं रुपये देते है इसे साख जलेबी कहा जाता है। तत्पश्चात भोजन होता है।

२७. पत्तल निकालना

वरपक्ष के मुखिया व लड़के के ननिहाल पक्ष के बुजुर्ग देवी देवताओं व पीतरजी की पत्तल निकालते हैं। वरपक्ष सात व ननहिाल पक्ष पांच परम्परा अनुसार पत्तल निकालते है। शुद्ध जल का गिलास मंगवाकर पत्तलों पर हाथ फेर के रुपिया रखकर देव समर्पण करते है। पानी किसी पेड़ में डाल दिया जाता है। पत्तले कार्टुन या डलिया मे मामापक्ष व वरपक्ष की २ जगह अलग २ रख लेते है। बारात बिदाई के साथ वर के धर साथ मै भेजी जाती है। इसमें एक थाली वधू की एवं एक थाली ब्रह्माणी की भी निकालते हैं, जिसमें रुपये भी दिये जाते है ।

२८. पहरावनी

यह रस्म वर को चौकी पर चुंदडी या गलीचा विछाकर उस पर बैठाकर की जाती है। पण्डित जी की पूजा के पश्चात वर को देने सा सामान (दुशाला, कंठी, घडी, अंगुठी आदि) जो भी कचोळा में रुपया देना हो, दिया जाता है। इस समय कन्या को दिये जाने वाले आभूषण या अन्य सोना/ चांदी व अन्य सामान दिये जाते है। इस सामान की पहले से दो प्रति बना लेना चाहिए एवं एक प्रति साहजी को सम्भला कर दे देते है। दोनों पक्ष अपने अपने जंवाईयों को तिलक करते हैं। मामा पक्ष भी जवांईयों को तिलक करते है।

नोट : इस समय जो भी बाराती रहते है उन्हें दूध चाय आदि दिया जाता है ।

२९. फेरपाटा

वर एंव कन्या दोनो मौजूद रहते है। एक पाटे पर सात स्वास्तिक मांडकर उनपर सात सुहागी रखकर पण्डित जी द्धारा पूजा करवाई जाती है। इस समय सेहरा खोलकर पान के पत्तों का सेहरा बांधा जाता है।

३०. विदाई – रामरमी व मिलाई

विवाह के पूर्व देहली पूजन भट्टी का नेग एवं थाम्ब का नेग करवाया जाता है। विदाई के समय घर के किसी नौकर को दोघड लेकर दरवाजे पर खड़ा किया जाता है। इस समय कन्या के साथ गणगोर (धरवा) एंव (चोलीया) भेजा जाता है। गाड़ी में बैठने के पश्चात करि-करवा गाडी के आगे के दाहिने पहिये के नीचे रखा जाता है। गाड़ी थोडी आगे ले जाकर वर एवं कन्या पक्ष के साहजी आपस में रामरमी करते है एवं मिलाई देते हैं दोनों पक्षो के पण्डितों को दक्षिणा देकर आशिर्वाद ग्रहण करते है।
तत्पश्चात दोनों पक्ष विदा लेते है। वरपक्ष वाले अपने कांकड पर-गांव की सीमा पर एक नारियल पधारते है (क्षेत्रपाल के लिए)

३१. वरवधु के पहुचने की बधाई - बाड रुकाई

वर पक्ष को पहुंच की प्रथम सूचना देने वाले को नेग दिया जाता है। वरवधु के पहुंचने पर सास-ससुर वरवधु को गोद मे लेकर उतारते है। दरवाजे पर खड़े जवाँई - बहन-बेटियां गेट रोककर बाड रुकाई का नेग लेते है। सास वरवधु को चोकी पर खडा करके आरता करती है बहन बेटी लूण राई करती है। तब वधु पगा लागनी देती है। वधु घर में रखी ७ थाली को धीरे से वर हटाता है और वधु बिना आवाज किए ऊठाती है। इस तरह गृह प्रवेश की प्रक्रिया होती है।

३२. देवी देवता पूजन एवं रात्री जागरण

स्थानीय देवी देवताओ के पूजन के वास्ते वर वधु को ले जाया जाता है। मिसरानी व धर की औरतें साथ जाती हैं। गीत गाये जाते हैं। बहुत से परिवारो में ननद-देवर, नई भाभी से सोट सोटकी खेलते हैं। महिलाएं रात्री में दीपक जलाकर एवं देवी देवताओं के गीत गाकर रात्री जागरण करती हैं। सिरगुंथी व चुड़ा पहेराना होता है।

३३. पग पकडाई एंव पूठमोड़ा

देवी-देवताओं की धोक के पश्चात कन्या के केश धोकर सुखाये जाते है एंव वर से बड़े जितने भी घर के लोग हैं वे कन्या से पांव पकडवा कर नेग देते है। इसी समय औरतें मुंह दिखाई का नेग देती है। तत्पश्चात कन्या को उसके मायके भेजा जाता है एवं कन्या को लेने वर कन्या के घर जाता है एवं उसी समय अन्य जंवाईयो को भी बुलाया जाता है एवं भोजन तिलक किया जाता है। इस अवसर पर वर पक्ष को परोसा भी भेजा जाता है। इसके लिए पहले ही वरपक्ष वालों से पूछ लिया जाता है।

३४. सुहाग थाल / जंवाई न्यूतना

परिवार की सात सुहागीन स्त्रियां एक बडे थालमें खाना लेती है व वधु को साथ लेकर खाना खाती हैं।
जवांईयों को बुलाकर उनको आदर सत्कार के साथ भोजन कराया जाता है। साला साली पान देती हैं। तीलक करके विदाई की जाती है।
नव वधु को भी साथ भेजी जाती है। इस अवसर पर वरपक्षवालों को मिठाई भी भेजी जाती है। वरपक्ष से पहले ही आदमियों की संख्या के बारे में पूछ लिया जाता है।

अन्य व्यवस्थाएँ : सुबह भोजन की व्यवस्था, जिमाने परोसने के बर्तन, स्टोर के लिए आदमी बैठाना, समय समय पर कमरों के बाहर आदमी बिठाना, वरमाला के समय कमरों की निगरानी की उचित व्यवस्था, वधू के साथ में जाने वाला चोलीया बंधवाना, परोसा बंधाने एवं भिजवाने की व्यवस्था, बिरादरी वाले सगे सम्बन्धियों मित्रों के फोन मोबाईल नम्बर की एक अलग लिस्ट बनवा लेनी चाहिये, जिससे समय समय पर फोन करने मे किसी को असुविधा न हो।

शादी के बाद नव वधु से कराये जाने वाले १२ महिनों के व्रत व त्यौहार :

१. होली का फेरा : नव वधु अपने अटल सुहाग के लिये फाल्गुनसुदी १५ को जिस समय होली मंगल (दहन) होती है ब्यावली चूनड़ी ओढ़कर, बटुवा बांधकर होली की चार परिक्रमा करके होली के साथ फेरा लेती है। इसमें उसकी ननद सास आदि साथ रहती है। पीहर या ससुराल कहीं हो सकता है।

२. गणगौर पूजन – होली की बुझी हुई राख लाकर उसमें चिकनी मिट्टी मिलाकर ८ पींडिया व गोबर की ८ पींडिया (गोल लडडू) बनाती हैं तथा चैत्रबदी १ से अष्टमी बासेडा़ तक उनका पूजन करती हैं तथा गीत गाती हैं। बासेडा़ वाले दिन चिकनी मिट्टी से गणगौर बनाती हैं। आजकल शहरोंमें बनी बनाई गणगौर भी मिलती हैं उन्हें खरीद के ले आती है। इसमें ईशर कान्हा, गौरा, रोवा व मालन बनाती है। इनका पूजन करके उनमें शिव पार्वती, कृष्ण राधा तथा उनकी सेवा के लिए मालन की भावना करती है। गणगौर प्राय: सामुहिक रुपसे पूजी जाती है। अविवाहित कन्यायें अच्छे वर के लिए व विवाहित अखण्ड सौभाग्य की कामना से पूजन करती हैं। सभी मिलकर एक ही गणगौर का निर्माण करती है। तथा बारी-बारी से अपने धरो में लेजाकर बनोरा निकालती हैं गीत गाती हैं। चैत्र सुदी तीज तक रोजाना सबुह जल लाकर स्नान कराती हैं। दुब व फुलों से पूजन करती हैं। दोपहर को कुँए से जल लाकर उनको जल पिलाती हैं तथा शाम को बनोरा निकालती हैं।

बीचमें पड़ने वाले रविवार का उजमण करती हैं तथा रविवार व बुधवार को छोड़कर बाकी के किसी भी दिन तीज होती है उसी दिन वर्ना दूसरे दिन कीसी भी तालाब, नदी या कुँए में उनका विसर्जन करती हैं। राजस्थान में प्राय: सभी

जातियाँ गणगौर पूजती है जयपुर में बडा भारी मेला लगता है। गणगौर पीहर या ससुराल कहीं भी पूजी जा सकती हैं। २१-१८ माठी छोटी छोटी बनाई जाती है । १७ माठी गणगौर को चढा़ते हैं। एक माठी विनायक की बोलकर छोटे भाई को देते हैं। पहिले दिन सिंधारा होता है। नववधु गणगौर का उजमण बिना नमक की १७ माठी से करती है। उस पर साडी़ ब्लाउज, नगद रखा जाता है। जो सास को दिया जाता है।

३. सावण वद पंचमी (नाग पंचमी) इस रोज रस्सी का नाग बनाकर पाटा पर रखकर पूजते है। तथा रात को भिगोये हुए मोठ बाजरे से पूजन करती है। मीठी पकोडी व कच्चा दूध तथा बासी (पहिले दिन का) बनाया खाना खाती है ।

४. सावण सुदी (सिधारा) व तीज : इस रोज नववधूएं ब्यावली चूनडी़ ओढ़कर जोहड़ जाती है जोहड़ की ४ चार परिक्रमा करके फेरा लेती है । यह त्यौहार पीहर में झूला झुलने गीत गाते हुए सखियों के साथ मनाती है। पहिले दिन तीज का सिंधारा होता है।

५. रक्षा बन्धन : नववधु सावण में पूरे मास अपने पीहर में आमोद प्रमोद के साथ रहती है। रक्षाबन्धन पर उसके ससुराल से मिठाई व कपडे़ आते हैं। बहिन भाई के स्नेह की अभिव्यक्ति रक्षासुत्र के रुप में होती है।

६. बछ्वारस : यह बेटा होने के बाद पूजी जाती है। भादवा सुदी बारस को होती है। गेहुं चावल नहीं खाती है।

७. दुबडी़ सातम : भादवा सुदी सप्तमी को पाटा मांडकर पूजन होता है। बेर की झाडी व दूब तथा मोढ बाजरा भिगोया हुआ आदि से सात कुडी करके पूजन होता है। साड़ी व्लाउज व नगद रखा जाता है।

८. होई आठम : लडके की मांताए करती है। कार्तिक वदी आठम

९. चोथ : कार्तिक वदी ४ को अखण्ड सौभाग्य के लिए व्रत करती हैं तथा रात में चन्द्रमा को अर्क देकर खाना खाती हैं। इसमें पीहर से १३ लोटा या गिलास आता है जो परिवार में सास, ननद, जेठानी आदि के पगा लगाके दिया जाता है। इसी चोथ से चोथ के व्रत का श्री गणेश करती है (१) कार्तिक वदी ४ (२) मंगसर वदी ४ (३) पोह वदी (४) माह वदी ४ (५) बैसाख वदी ४ (६) भादवा वदी ४

इन चौथों के व्रत करती है । दिनमें चौथ की कहानी सुनके बाणा निकालती है। तथा चंद्रमा को अर्क देने के बाद सास को पगां लाग के बाणा देती है। इसमें सभी महिनों की १३ चोथ भी महिलाऐं करती है तथा उनका ही ऊजमन होता है।

१०. दिपावली : कार्तिक वदी १५ अमावस्या को होती है। इसमें पीहर वाले मिठाई व कपडा़ भेजते है । परिवार के साथ दीपोत्सव मनाया जाता है ।

११. संक्रान्ति : यह त्यौहार मकर संक्रन्ति के रोज मनाया जाता है। प्रायः १४-

१५ जनवरी को होता है। इस दिन सूर्य उत्तरायण में जाता है। इस दिन नव वधू अपनी सास-ससुर, जेठ-जेठानी, ननद-देवर आदिका सम्मान करके गीतों के साथ कपड़े पहनाती हैं मिठाई देती है। यदि किसी कारणवश कोई रुठ गया हो तो उसे मनाती हैं। इसका भाव यही है कि परिवार में सबको प्रसन्न रख के बहु सबका आशीर्वाद ले ताकि परिवार में शांति व एक जुटता बनी रहे। तिल के लडडु या चक्की बनाकर खाने का रिवाज है। गरीबों को तिल के लडडु व दान दिया जाता है बाणा निकालकर सासू को दिया जाता है। पीहर से चोलिया आता है। १६ किस्म की १६ किलो मिठाई रखके आता है। साडी ब्लाउज रखा जाता है।

प्राथमिक मुख्य व्यवस्थाऐं

वैवाहिक स्थान पर व्यवस्था

बर्तन-हलवाई	माण्डा	फेरा का सिंहासन
रिसेप्सन की कुर्सी	बुफे टेबल	तख्ता
भट्टी कोयला	गैस का चुल्हा, गैस	किरासन डीजल

स्थान निश्चित करना

चंवरी	रिसेप्सन	बुफे
पानी	कुल्फी	भट्टी
पेय पदार्थ बनाने	पेय पदार्थ वितरण	बर्तन क्रोकरी सफाई
भण्डार	कमरे	कचरा गिराने का बर्तन
डेकोरेटर	मण्डप शामियाना	गलीचा जूट मेटिंग
सोफा	गार्डेन चेयर	

फूल वाले से सम्बन्धित व्यवस्था

चंवरी	वरमाला स्टेज	वरमाला-२
माला (कोरथ के लिए)-१	गेट-खिडकी	फूल पुड़िया (पुजा के लिए)
खुला फूल (वरमाला के समय)	अन्य जगह को देखकर	

बिजली कार्य व्यवस्था

जेनेरेटर	पंखे (पेडस्टल)	विडियो लाइन
कोफी मशीन की लाईन	ओवन के लिए लाइन	गेट पर लाइन
अन्य जरुरत के हिसाब से		

अन्य व्यवस्थाए

सफाई कमरे की	होल	लान	बाथरुम	अन्य

बेठकर सज्जनगोठ

पत्तल	बाहमणीकी थाली	वधू की थाली
पानी का गीलास	तौलिया	खाली डिब्बे
साख जलेबी	परोसने के बर्तन	जिमाने के बर्तन
कागज-कलम	पातल के लिए मिठाई	

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सावा पूजन
सामग्री हलदात

रोली, मोली	पान–७	सुपारी–७
पुष्प, दुर्वा	आम पत्ता	गुड़
ऋतुफल–५	लवंग	इलायची
चावल	श्वेत वस्त्र	कुंकुपत्री
कलश–१	शराई–७	पूजा की थाली
पानी की घंटी	सूत का कुकडिया	डोरी का नाल
छाप	हंसली	हल्दी पीसी हुई
विनायक जी का पीढा	दाल पीसी हुई	ऊखल, मूसल
स्टील की चम्मच–२	नमक डली का	छाजला–२
जौ–१ पाव	हल्दी की गांठ	ताला चाबी

साकडी रारवी (बान)
पूजन सामग्री

रोली, मोली	पान–११	सुपारी–११
पुष्प, दुर्बा	आम पत्ता	गुड़
ऋतुफल	लवंग	इलायची
चावल	चिल्ला पूडा–४	रेशम की फूल माला
कांगन डोरा	पैर का कंगन	चकला, बेलन
तेलबान की सामग्री	तेल	शराई–५
मेंहदी	दही	पीढी
पाटा	चौकी	चंदवा का ओढना
झोल	नया पाटा	धी
चीनी	आरते की थाली	

साहजी से मंगाने या भेजने की सामग्री

लाल पाठा	पीला पाठा	सुहाग पुडो
करी माटी की	नाल–१	लाल वस्त्र – आधा मीटर
हिरमिच	प्यावडी	

राती जुगो की सामग्री

माटी को झावलो	कांसी की कटोरी–१	नाल
हिरमिच	प्यावडी	मूंग
घी	माचिस	रुई–चालनी

कुंवारे मांडे (धाम) की पूजन की सामग्री

रोली, मोली	पान–७	सुपारी–७
पुष्पु दुर्वा	गुड़	लवंग
इलायची	ऋतुफल–५	चावल
मूंग	कलश–१	शराई–७
ताम्बे की घंटी–१	नारियल–१	तेल
थाम	थाम के लिये माठी	नारियल की रस्सी–२
बाँस की बडी बेंत–४	शराई–४	ईंट
लाल वस्त्र १ मीटर	सफेद वस्त्र–१ मीटर	खाली टीना–१
माटी की सराई-४		

कोरथ पूजन सामग्री

रोली, मोली	पान, सुपारी–५	पुष्पा, दुर्वा
गुड़, चावल	नारियल–१	लग्न पत्रिका
लवंग इलायची	मुंग थाली में	गुड की भेली
	पुष्प माला (वर के लिये)	

डाला का सामान

डाला, लाल कपड़ा	सूहागपुडो
गोद भरने का सामान – ४ थेली	गट, मेवा, थैली, रुपया
सेवरा–२	झालरा (सात चांदी की पातडी का)
गठ जोड़ा का दुपट्टा	व्यावली चून्दडी
कांच (दर्पण)	कांगसी
मैण, हीगंलू	चीनी – मिश्री
इत्र की शीशी	केशर की डब्बी
छड़ छड़ीलो	गिलास (चांदी–स्टील)
महेंदी पिसी हुई	डब्बी–४ सुहागी–२८
नौकर का कपड़ा	थैली में छुहारा–बादाम–पताशा
बच्चों के जोड़े	मेंहदी
	फेर पाटा की साडी

बींद बनना

आरता की थाली	सेवरा	किलंगी
साफा–पेचा	कंठा	छत्तर

विवाह पूजन सामग्री (फेरा)

रोली मोली	पान, सुपारी–२५	चकला
हल्दी पिसी हुई–५० ग्राम	आटा–५० ग्राम	चन्दन

लोडी–१	पुष्प	केशर
आम पत्ता	दुर्वा का बंडल–२	पुष्प माला
रुई	तोरण–१	सुर्वो–१
पाटा–२	माचिस	अगरबत्ती
ईत्र	गुड	चौकी–१
गंगाजल	मेंहदी	चंवरी की डोका
फल–६	केला–१२	ताल मखाना
खूमचा–१	आम काठ २ किलो	खील
गोबर	लवंग	इलायची
लाल वस्त्र–१ मीटर	श्वत वस्त्र १ मीटर	सोने की टिकडी–१
ताम्बे की छनी–१	तांबे की घंटी	दही, शहद
कांसे की कटोरी–४	घी–आधा किलो	कांसे का कचोला–१
चावल–सवा किलो	गेहू पाव किलो	गट–२
लोटा–१ पीली सरसों	पूर्ण पात्र का टोपिया–२	आसन–२
अबीर, गुलाल	लाल साटन का कपडा–२ मीटर	
कपूर की गोली	वर कन्या का वस्त्र	कलश–१
यज्ञोपवित्र–५ ब्राह्मण का वस्त्र	शराई–२१	छालजा छोटा–१
चांदी का सिक्का–१ रेजगारी	छुटा रुपैया	लोटा–२
गमछा–२	धोती–२	तोलिया–२
शंख–१	नारियल–१	थाली–२
धरेलू सामान	खील	खूँटी–४
जाटी की लूँग	बेडशीट–३	गठ जोड़ा का दुपट्टा
अंगूठी सोने की (कन्या दान की)		सूत का कुकडिया

रसोई के लिये बर्तन आदि

टोप बडा पीतल का	टोप ढकन बडा अलूमिनियम	टोप स्टील
टंकी	नाव	परात
खुमचा	तवा–बडा	चिमटा
चकला–बेलन	सण्डासी	कढाही
झरिया	कुचिया	बडी चम्मच
चाकू	चालनी	सील–लोढा मिक्सर
हमामदस्ता–मुसली	गैस चुल्हा सिलेण्डर रेगुलेटर	पाटा

चूल्हा भटी	स्टोव तेल पिन	टोकरी
छितरी	कपडा–छानने का	कपडा़ पौछने का

आदमी व्यवस्था

आवभगत के लिए	रसोईया हलवाई	नाई
धोबी	मोची	नोकर
दरवान	बाजार कार्य के लिये	स्टोर के लिये

आवागमन

कार	बस	गाड़ी सजी हुई
धोडी़ सजी हुई	रेलवे रिजरवेशन	

भोजन

प्रातःचाय	सुबह का चाय नास्ता	भोजन दिन का
दिन में फल लस्सी आदि	रात्रि भोजन	दूध रात में
कर्मचारियों का भोजन	चाय दिन भर	

खाना-परोसने का

थाली	गिलास	कटोरी
बड़ी चम्मच	छन्नी प्लेट	दही बडा प्लेट
सागदान चम्मचा	रायतादान	जग
चम्मच	टेनिया	बाल्टी
पत्तल	पांतिया	ट्रे
कप–प्लेट	भातीया	

बिछावन-समान

दरी	गद्दी	चाननी	रजाई	कम्बल
तकिया	खोल	मसण्ड–खोली	गलिचा	पायदान
चद्दर				

फरस्ट एड् औषधि

अमृत धारा	डिटोल	टिंचर
बेन्ड एड	बरनोल	ड्रेसिंग पट्टी
सिर दर्द की दवा	पेट दर्द की दवा	दस्त की दवा
गेस की दवा	रुई–बैण्डेज	बुखार की दवा

स्वागत समान

पान	पान मसाला	जर्दा	सिगरेट
सोंफ	ताश	धनिया	माचीस
इलायची	सूपारी	लोंग	अन्य

राशन

आटा	चावल	दाल–मुंग, उड़द मोठ
चीनी	घी–वनस्पति	धी–देशी
तेल	मेदा	बेसन
सूजी	चाय पत्ती	कोफी पाउडर
पापड	चिप्स	साबुत मुंग

मसाला

लाल मिर्च पिसाई	धनिया पिसाई	हल्दी पिसाई
अमचूर पिसाई	काली मिर्च पिसाई	काला नमक पिसाई
नमक	जीरा	धनीयासाबूत
हींग	सोफ	लवंग
अजवान	इलायची	खाने का सोडा
जायफल	जावित्री	दालचीनी
गरम मसाला	तेज पत्ता	इमली
टाटरी	अन्य	

सब्जी

आलू	हरा धनिया	निम्बू
टमाटर	अदरख	हरी मिर्ची
प्याज	काकडी	गोभी
मटर	अन्य	

अन्य सामान

सोफा	कुर्सी	पर्दा
तख्ता	पेट्रोमेक्स	टार्च–बटेरी
मोमबत्ती–माचिस	एस ट्रे	ताला
फिनाईल	विम पाउडर	झाडू
पौछना	केंची	सुई धागा
हथौड़ी	स्क्रू–ड्राईवर	सेफ्टी पीन
प्लास	पेन	पेड
ओडोमास	टूथ पिक	रुपये का लिफाफा
कागज प्लेट	खुदरा रुपया	रेजगारी
लाल कपड़ा	गुलाबी कपड़ा	पुराना कपड़ा
खाली टीन	छाता	थेला
पूराना अखबार	बारदान	
प्लास्टीक की रस्सी	कार्टून पतले के डब्बो पेक करने	

बच्चे का जन्म

बच्चे के जन्म का नेग

सामग्री : बच्चे के दादाजी की पहनी हुई धोती या लूंगी

बच्चा पैदा होने के बाद लड़का हो या लड़की, दादाजी की पुरानी धोती, या लूंगी में लपेटकर, दादाजी की गोद में देते हैं, या ताऊजी किसी और भी बड़े की गोद में देते हैं।

जन्म घूंटी

सामग्री : चीनी – पानी –अजवाईन – रुई – शहद – चांदी की चम्मच व कटोरी

दादाजी व बड़ा कोई भी बच्चे को गोद में लेकर घूंटी देते है। चुटकी भर अजवाईन पानी में उबालकर, चीनी मिला दें रुई व मलमल के कपड़े से अजवाईन से बनायी घूंटी देते है। आज कल शहद से भी जन्म घूण्टी देते है। सोने की तार व गिन्नी से बच्चे की जीभ पर ॐ लिखते है।

देवी देवता के गीत

बच्चे का नाल् कटने के बाद घर में पांच देवी–देवता के गीत गाये जाते हैं। खुशी मनाते हैं। ब्राह्मणी के हाथ में लड्डू या गुड़ तथा बधाई भी देते हैं।

थाल बजाई

सामग्री : थाल – बेलन – रोली – मोली – चावल

घर में बड़ी दादी या ताई ये नेग करती है। कांसी, पीतल या चांदी की थाली में साथिया बनाते हैं, बेलन के मोली बांधते हैं जापा वाले कमरे से बाहर सीढ़ी तक थाल बजाते हुए जाते हैं। दादी या ताई को थाल बजाने का नेग दिया जाता है। थाल बजाने का मतलब सबको बताना है कि हमारे घर लड़का हुआ है।

थापा लगाने का नेग

सामग्री : हिरमच – पानी – थाल

बहन, भूवा से ये नेग करवाया जाता है। हिरमच को, थाल में घोलकर, दरवाजे के दोनों तरफ, रसोई में, जच्चा के कमरे के आगे थापा लगाते हैं। संख्या में ५,७,९,११ होते है। बहन बेटी को नेग दिया जाता है। संख्या में सब कोई अपनी रिवाज से लगाते हैं।

नाना–नानी के घर बधाई

घर का नाई या नौकर हरी दूब लेकर नाना–नानी के घर जाता है और बच्चा होने की बधाई देता है। नाना–नानी उसे नेग देते है।

चूंची धुलाई का नेग

सामग्री : थाल – दूध – पानी – मूंग – चावल – कंधी – बाल – दूब

लड़का हो या लड़की दोनों के होने पर ये नेग होता है, शाम को तारे उगने के बाद जच्चा की ननंद एक चांदी के थाल में थोड़ा दूध और जल मिलाकर थोड़ी दूब, मूंग, चावल और एक कंधी में बाल लपेट कर थाली में रख देती है। जच्चा बच्चे को गोद में लेकर बैठ जाती है। दूध की थाली में सात बार कंधी भिगोकर, सात बार दोनो तरफ चूंची को लगाती है, फिर जच्चा बच्चे को दूध देना प्रारम्भ करती है। ननंद को नेग दिया जाता है।

टेकड़ी की जात – पांच किलो जंवार व सराईके साथ जच्चा पर वार कर सुबह पांच बजे चौरास्ता पर रखते है।

बच्चा बारां होने पर

बच्चा मूलों में पैदा होता है तो – अगर कोई बच्चा लड़का हो या लड़की गंढ़ मूल यानि बारों में पैदा होता है तो, जितना दिन का बार हो उतने दिन के बाद नहान होता है, पंडित व डाकौत बुलाकर सामग्री लिखी जाती है। सारा समान इकट्ठा करके दोनों पति पत्नि गठ–जोड़े से पूजा करवाते है। डाकोत अपने घर से टाटी बनाकर लाता है। पूजा पूरी होने के बाद डाकोत बच्चा अपने पास लेता है। डाकोट को दान दक्षिणा देकर बच्चे को मोल ले लिया जाता है।

पांयची, नहान, जलवा, चूड़ा पहनाने का नेग, सब बारों की पूजा करने के बाद ही होता है। कमरे को धुलाकर पंडित, हवन पूजा भी करवाते है। वहीं पर पांयची पूजा का नेग, यदि लड़का हो तो उसी दिन साथिया लगाते हैं, तनाव बन्धवाते हैं, बन्दरवाल बान्धते है। चूड़ा पहनाना, जलवा पुजवाना, छटी पुजवाना, चूल्हा पुजवाना सब काम बारां की पूजा के बाद करते हैं। ब्राह्मण को व डाकोत को जीमाया जाता है। बच्चे के दादाजी बच्चे के हाथ व पांव में चांदी का कड़ा पहनाते है। बच्चे का पग पूजते है और कहते हैं मैं छोटा और तू बड़ा, सुख पावो। मिसराणियां पहले देवी–देवता का गीत गाती है फिर पांयची व जापा का गीत गाती है।

चूड़े का मुहूर्त

चूड़े का मुहूर्त निकलवाकर बच्चे के ४० दिन का होने के बाद पांयची वगैरह सारे नेग होते है। किसी के यहां पांयची ६ दिन में भी पूजते है।

पांयची

सामग्री : लड़का हो या लड़की पांयची की तैयारी पहले दिन कर लेते है। एक गोंद का लडू जच्चा को खाने के लिये, थोड़ा गेहूँ का आटा, हल्दी, तेल, जच्चा के उबटन के लिये, थोड़ा आटा, तेल बच्चे की लोई के लिये, नीम का पत्ता, अजवायन, गरम पानी करने के लिये (नहान के लिये पानी में नीम का पत्ता डालकर उबाल लें) झोल व गौ मूत्र नहलाने के लिये, नहाने वाले पाटे नीचे एक परोत रखी जाती है। प्लेट में मूग, चावल, गुड़ व पैसा रखकर पन्नी लगा देते है।

पांयची की पूजा के सामान में एक थाली में परोत, एक कटोरी में सूखा आटा, चौक पुराने के लिये होता है।

एक चांदी की थाली में चांदी की घण्टी, जल, रोली, मोली, चावल, मूंग, गुड़, नारियल, दूब, लड्डू, बच्चे का पहनाने का कपड़ा, झालरा, पातड़ी, तागड़ी, पूंचिया रखे। मिट्टी के दीपक में तेल, रूई की बत्ती, माचीस, तनाव बांधने के लिये नारियल की रस्सी, चांदी का प्याला काजल बनाने के लिये और नगदी रूपये। लड़की हो तो भी इसी तरह तैयारी होगी। साथियों के लिये गोबर, सिक्का, गिन्नी, अंगूठी। नाल़, रस्सी व आम के व नीम के पत्तों से बन्दरवाल बनाना।

गेहूँ, चणा, घूघरी के लिये, २ लाल ब्लाऊज पीस, एक कुँआ पूजन के लिये, १ मिट्टी का घड़ा, व छड़ा पूजन के लिये। चांदी की घंटी, चाबी का कड़ा व दौघड़ की तैयारी। नेवगी

को बन्दरवाल नेग देना।
गीतों के लिये मिसराणी व सहेलियों को बुलाना

बन्दरवाल बन्धवाना

नाई या नौकर से दरवाजे पर आम व नीम के पत्तों की बन्दरवाल बंधवाते है। मैन दरवाजे पर, जच्चा के कमरे पर व सभी दरवाजों पर, नीम के पत्ते से भी बन्दरवाल बन्धवाई जा सकती है। जिससे कीटाणु अन्दर न आ पायें।

पितरों की पहरावनी

सामग्री : धोती, गंजी, तोलिया, रुमाल, कुर्ते का कपड़ा, रुपैया पितराणी के लिये साड़ी, ब्लाउज, रुपैया।

नहाने के बाद जच्चा पुराने कपड़ा पहन कर ही पहले अपने पितरजी व पितराणीजी की पहरावनी निकालती हैं, फिर खुद नये कपड़े पहनती है। पहरावनी में पांच कपड़े पितरजी के व रूपये होते है।

पांयची की तैयारी

लड़का हो या लड़का दोनों में पांयची का नेग होता है। बच्चे के नये कपड़े नानी के घर से भी आते हैं, बहन बेटी भी लाती है। जच्चा भी लाल हरा नया कपड़ा पहनती है। अपने यहां में पांयची के दिन सुबह बच्चे को, भूवा का कपड़ा ही पहनाते है। लाल कुर्ता टोपी होते हैं। फूल माला लाल धागे में बांट कर बनाते है, उसमें रेशम का फून्दा लगाते हैं। फूल माला के बीच में एक काले कपड़े में नमक राई बांधते है, एक लाख का, एक लोहे का छल्ला फूल माला में डालते है, एसे ही बच्चे की फूल माला बनती है। फूल माला एक बच्चे की व एक जच्चा की होती है।

बच्चे को एक तागड़ी, २ हाथ में व २ पैर में पुचिंया नाल का बांट कर पहनाते है। अगर लड़का हो तो २ माला रेशम की ज्यादा बनाते हैं एक पलंग पर बांधते हैं, दूसरी दरवाजे पर बांधते है।

पांयची पुजाने का नेग

सुबह-सुबह सास झोल ड़ालकर, नेवगण नीम के पत्ते से उबाले हुए पानी से नहलाती है। उबटन करती है, गौ मुत्र पानी में डालकर शुद्धिकरण करती है।
पुराने कपड़े पहनकर, पहरावनी चिरचना व निकालना पांयची के दिन घर में मूंग, चावल व हलवा बनाना हलवा पर ब्लाऊज पीस व रूपये रखकर चिरच कर सास को पांव छूकर देना जच्चा को पांयची के पहले दिन मेंहदी लगवाते है। हर पूजा मेंदही लगे हाथों से होती है, ये सुहागन की निशानी है। पांयची बहन बेटी पुजवाती है।

तागड़ी, पुंची, झालरा, कुर्ता, लाल टोपी, पहनाकर व सफेद कपड़े का पोतड़ा बनाकर गोद में लेकर जच्चा पांयची पूजती है। पांयची पूजते समय आटे से चौक पूरते है, जच्चा को पीढे पर बिठाते है, पाटे पर मिट्टी का दीया, जल की लौटी, चांदी का प्याला रखते है।

पांयची पुजवाने के लिये एक थाल में रोली, मोली, चावल, गुड़, तेल का दीपक, आटे से चौक पुराते हैं, दीपक जलाकर जच्चा को धोक दिलाते है। सात बार मूंग-चावल का आखा डलवाते है, बाद में चांदी के प्याले से निकाला काजल बच्चे को भूवा डालती है,

आईब्रो बनाती है। वो चांदी का प्याला भूवा को या बहन को दिया जाता है।
झालरा में ९ या ११ पातड़ी होती है। मां व बच्चे दोनों को झालरा पहनाया जाता है।
हनुमानजी – रामजी – श्यामजी – चांद – सूरज – पितरजी – पितराणीजी – राजुल सत्ती – मामलिया – उजली – मैली (ताम्बे की)

आरता का नेग भी होता है, छात होती है। सभी को पगा लागनी भी देते है। ननद को आरते का नेग दिया जाता है।

तनाव बंधाना

सामग्री : नारियल की रस्सी – पुराना लाल ब्लाऊज – नमक – राई – पैसा – मूंग – चावल

देवर व जेठुता से तनाव बंधवाते है। नारियल की रस्सी के बीच ब्लाऊज में, पैसा, नमक, राई, मूंग, चावल, बांध रस्सी के चारों कोने से चौक में बांध देते है। देवर व जेठूता को नेग दिया जाता है।

रसोई का अछूता

लड़का हो या लड़की पांयची के दिन रसोई का अछूता निकालते है। मूंग, भात, हलवा, पूड़ी की रसोई बनाते है। ग्यारह जगह चार-चार पूड़ी, हलवा, रूपया रखकर मूंग, भात, चीनी, घी रखकर, रोली चावल से चिरच कर जल के छीटा देकर हाथ फेर लेते हैं। अछूता निकाली हुई रसोई मिश्राणियों को दी जाती है।

सामग्री : ४ किलो गेहूं, १ किलो गुड़, २५० ग्राम घी, रुपैये, २ साड़ी, गिन्नी या सिक्का, अंगूठी, गोबर, रोली, मोली, मूंग, चावल, मैंहदी, हल्दी, आटा।

यदि लड़का हो तो जापे के कमरे के दरवाजे के दोनों तरफ ननद साथिया छाबड़ी मांड कर, लगाती है। गोबर से बनाती है, ऊपर रोली, मैंहदी व हल्दी आटे की बिन्दी लगाती है। साथिया दाहिनी तरफ व छाबड़ी बायीं तरफ लगाते है। साथिया में अंगूठी व छाबड़ी पर गिन्नी या चांदी का रूपैया चिपकाते है। साथिया के आगे सीधा- ४ किलो गेहूँ, १ किलो गुड़, १/४ किलो घी उस पर रुपये रखते हैं। छाबड़ी के आगे २ साड़ी रखते हैं जो कि बाद में ननद को दे दिया जाता है।

साथिया छाबड़ी के सामने सात-सात बार मूंग चावल से आखा डालते है। साथिया छाबड़ी को रोली चावल से चिरचते हैं, ननद बच्चे व जच्चा को टीका निकालती है, व धोक लगवाती है।

पायंची की रात में बेमाता के लिये एक कलम, कापी, बूंदी का लड्डू व पानी बच्चे के सिरहाने रखते है। सुबह कापी पैन उठाकर रख देते हैं, और लड्डू का प्रसाद ले लेते है। वह बेमाता यानि भाग्य विधाता का भोग होता है कहते हैं इस रात बेमाता बच्चे का भाग्य लिखती है।

तालुवा का नेग

अगर पहली लड़की होती है तो नानी तालुवा का नेग भी इसी तरह लेकर आती है। बस, पीले की जगल पोमचा लेकर आते है। लड़की का मेवे से पल्ला भरती है व रूपये देती है।

खिचड़ी का नेग

सामग्री : पहला लड़का होने पर पीहर वाले खिचड़ी का नेग देते हैं। जिसमें ढ़ाई तील

जच्चा की, व कपड़ो में पीला जरुरी होता है। २ तील बाई की सास की। बच्चे का जामना व कुर्ता–टोपी खिलौना देते है। दादस नानस हो तो उनका पीला या साड़ी होती है। जंवाई की पौशाक, जवाई का तिलक व सभी की पधांलागनी करते है। लड्डू, मेवा, घी, मूंग, चावल, चीनी, सौंठ, गौंद, अजवाईन, एक बड़ा पतौला व बड़ी चम्मच जरूर देते है।

(सिरगूंथी)

बाल बनवाना, चूड़ा पहनाने का नेग

घर में बनी रसोई से पितरों के नाम का अछूता निकालकर सबको भोजन कराते है। बाद में सूरगूंथी, (पंडित जी से चूड़े के मुहूर्त निकलवा कर समय निश्चित होता है।) एक चम्मच में घी गरम करके ननद या सासुजी जच्चा के सिर में घी डालती है, चोटी बनाती है, मांग टीका व बोरला लगाती है। मुँह धुलवाकर, आँखो पर पानी लगाती है। बहु उठकर ननद को लड्डू, रूपये देकर पांव छू लेती है। फिर जच्चा के नाखुन मे मेंहदी व हिंगलू का चूड़ा पहनाती है। पहली बार चूड़ी ननद को पहनाते है, कोयला से चूड़ा नरम करके चूड़ा पहना देते हैं। दोनों हाथों पर जल डालकर ठण्डा करते हैं। चूड़ा पहनाने वाली मणिहारी या नन्द को गूड़ या लड्डू, चीनी, रूपये देते है। चूड़े में राखी या लुम्बी बांधदेते है।

कुंआ पूजन (सामग्री)

सामग्री : जलवा पूजन की सामग्री व पूजन एक थाली में जल की लोटी, रोली, मोली, चावल, मूंग, गुड़, गेहूं चना की घूघरी, गोंद का लड्डू, एक लाल ब्लाऊज पीस ये सब लेकर जाना होता है। जच्चा के हाथ में चांदी की घंटी, मूंग, चावल, दूब, पैसा डाल देते है और चाबी का कड़ां घंटी मे व सफेद कच्चे सूत से घंटी को लपेटते है। घंटी जच्चा के हाथ में होती है। जच्चा लेकर चन्दवे के नीचे कुंआ पूजने जाती है।

कुंआ पूजन

जच्चा को सजाते है, पीला उढ़ाते है उपर से सफेद पोतड़ा लगाते है। पीला के नीचे एक और घूघरी का अछूता भी निकालते है। चंदुवा करकर घर से निकलते है, निकलते समय जच्चा दौगड़ की पूजा करती है जो कि नौकर बाहर गेट पर लेकर खड़ा होता है। उसके बाद कुएं पर जाती है, बाजे वाले के साथ गीत गाती मिश्राणिया निकलती है। कुएं पर साथिया छाबड़ी करती है। गुड़, घूघरी, मोली, लड्डू ब्लाऊज रूपये चढ़ाती है। जच्चा अपने दूधकी धार कुएं में डालती है और बोलती है जैसे कुएं का पानी भरा रहता है, उसी तरह मेरा भी दूधबना रहे। कुएं पर चढ़ाया सामान कुएं मे डाल देते हैं ब्लाऊज रूपये वहाँ रहने वाले को दे देते हैं। कुए के चार फेरी लगाती है। हाथ जोड़कर घर आ जाते है। किसी के यहाँ दौगड़ पूजन ही कर लेते हैं।

बाड़ रूकाई

कुंआ पूजन के बाद बहन बेटी दरवाजे पर जच्चा की बाड़ रूकाई करती है। बहन बेटी को नेग दिया जाता है। किसी के यहाँ आरता भी ननद करती है।

घड़ा पूजन

पीढ़े पर पानी का घड़ा, ढक्कन लगाकर रखते है। उसके उपर गोंद का लड्डू, लाल ब्लाऊज पीस, रूपये रखते है। जच्चा बच्चे को गोद में लेकर दूसरे पीढ़े पर बैठकर, पीला

औढ़े ही पूजा करती है। घड़े पर स्वस्तिक बनाती है। मूंग, चावल से आखा डालती हैं। जलवा पायंची में एक जैसे ही गीत गाये जाते हैं।

पितरों की धोक

परिन्डा में पितरों की धोक लगवायी जाती है। स्वस्तिक व टीका करके ७ बार मूंग चावल से आखा डलवाते है।

चूल्हा पूजन

गैस चूल्हा पर भी स्वस्तिक करवाते है। रोली से चिरचते है सात बार मूंग चावल से आखा डलवाते है। फिर रात में रसोई, हरी सब्जी से फलका बनाया जाता है।

जापा का गीत

जच्चा

रंग महल बीच जच्चा होलर जायो ये, सोन को थाल थारी सासुजी बजावै,
थारा भाभीजी बजावै, अलबेली जच्चा ये मारुजी बुलावै जी राज।
आड़ा तो टेड़ा परदा लगावै, थार होलर न हुलरावै,
थारा पोतड़ा धोल्यावै, अलबेली जच्चा थारा हरक करावै,
माथ र प्रमाण थारा महमद ल्यावै, रखड़ी री मोज थारा मारुजी लगावै,
काना र प्रमाण थारा कुण्डल ल्यावै, हारज की मोज थारा मारुजी लगावै,
बैंया र प्रमाण थार बाजुबन्द ल्यावै, चुड़ला री मोज थारो आलीयो लगावै,
पघां र प्रमाण थार पायल ल्यावै, बिछिया री मोज थारो आली जो लगावै,
अलबेली-जच्चा थारा माऊजी बुलावै, गीगो तो ले म्हारी जच्चा हाजिर उब्याहा
दोये पग स्यामी थारा मारुजी लगावै, सेर सोने को थान हंसलो घड़ाव
गीगा न कंठलो घड़ावै, अलबेली जच्चा थान मारुजी बुलावै॥

गीगलो

ऊँची हटड़िया, जठै मेर ललणा का पलणा, मेरो हरख्यो लाल गोविन्दो, खेलण न मांग चन्दो,
एक पड़ोसन मेर जाप मं आई, मेर गीगल क नज़र लगाई.
मेर हरख्यो बाल गोविन्दो, खेलण न मांग चन्दो,
आँख्या न चौंधमेर मुखड़, नही बोल, हरड़-२ दुध्यो गेर रै,
मेर हरख्यो बाल गोविन्दो, खेलण न मांग चन्दो,
लट्टू भी लैलै गीगा, फीरकी भा लैलै,
मैं चांद कठसै ल्यासू, मेरो हरख्यो बाल गोविन्दो,
भर कुण्डलो पाणी को ल्यायी, मेर गीगल न चांद दिखाई,
मेरो हरख्यो बाल गोविन्दो.............
लूण करूंगी मै तो राई करूंगी, मेर गीगल की नजर उतारूं,
मेरो हरख्यो बाल गोविन्दो.............
आँख्या भी खोल, मेरो मुखड़ भी बोल, मेरो गट-गट दूध्यो पीवरै,
मेरो हरख्यो बाल गोविन्दो.............

हिन्दूस्तानमें ही हिन्दू अल्पसंख्यक बन जायेगा

परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराजने अपने प्रवचनों-उपदेशोंमें परिवार-नियोजन, गर्भपात एवं भ्रूण-हत्याका तीव्र विरोधकिया है और समस्त हिन्दुओंको आगाह किया है कि इससे वर्तमानमें बहुसंख्यक कहलानेवाला हिन्दू-वर्ग आगे चलकर अल्पमतमें आ जायगा और हिन्दुस्तान खतरेमें पड जायगा।

इस तालिकामें तीन श्रेणीके परिवारोंके आगेकी चार पीढ़ियों (वर्तमान-समेत पांच पिढ़ियो) - का अध्ययन किया गयै है और यह माना गया है कि ओसतन ३० वर्षके बाद नई पीढ़ि आ जाती है। गणनाकी सुविधाके लिये हम यह भी मानकर चलते हैं कि प्रत्येक परिवार में लड़को और लड़कियोंका अनुपात बराबर रहता है। लड़कियोंको ससुराल भेज दिया जाता है ओर लड़कोंके लिये बहुएँ ले आयी जाती है।

प्रथम परिवार - (हमारे दो - हमारे चार) वृद्धिदर २ गुना	पति-पत्नी + ४ बच्चे (१ दम्पति) X	२ दम्पति - ८ बच्चे X	४ दम्पति - १६ बच्चे	८ दम्पति - ३२ बच्चे	१६ दम्पति - ६४ बच्चे	११२
द्वितीय परिवार- (हमारे दो - हमारे दो) वृद्धिदर शून्य	पति-पत्नी + २ बच्चे (१ दम्पति) X	१ दम्पति - २ बच्चे X	१ दम्पति - २ बच्चे	१ दम्पति - २ बच्चे	१ दम्पति - २ बच्चे	६
तृतिय परिवार- (हम दो - हमारे एक) घाटे का सौदा	१६ दम्पति - १६ बच्चे X	८ दम्पति - ८ बच्चे X	४ दम्पति - ४ बच्चे	२ दम्पति - २ बच्चे	१ दम्पति - १ बच्चा	?

तालिका-विश्लेषण

पहला परिवार - इसमें पति-पत्नी तथा ४ बच्चे है। इस परिवार में वृद्धिदर तीस वर्षोमें दो गुना है। १२० वर्ष के बाद इस परिवारमें कुल सदस्य संख्या होगी - ११२ जिसमें ६४ बच्चे, ३२ माता-पिता एवं १६ दादा-दादी।

दूसरा परिवार - अब बारी आती है दूसरे परिवारकी, जिसमें वर्तमानमें पति-पत्नी और २ बच्चे हैं। वह परिवार 'हम दो - हमारे दो' के सिद्धान्त के अनुसार चलता हैं और आगेकी चार पिढ़ियों तक परिवारमें दो-दो बच्चे ही पैदा होते है। इस परिवारमें १२० वर्ष के पश्चात कुल सदस्योकी संख्या छः होगी, जिसमें दो बच्चे, दो उनके माता-पिता और दो उनके दादा-दादी। इस वंशमें हमेशा औसतम छः सदस्य ही रहेंगें अर्थात् दादा-दादी मरे, पीता-पोती जन्मे, रहे छः-के-छः, कोई वृद्धि नहीं हुई य़ इसमें मूलपर कोई व्याज नहीं मिला, मूलके बदले सिर्फ मूल ही मिला और वृद्धिदर शून्य हो गयी।

तीसरा परिवार - और अब क्रम आता है, तीसरी श्रेणी के परिवार का, जिसका नारा है - हम दो - हमारे एक। इसमें एक परिवारके बदले एक परिवार भी नही बनता प्रत्युत अगली पीढ़ीमें परिवार आधा हो जाता है। इसमें मूल इन्वेस्टमेन्ट के बदले मूल भी पूरा नहीं मिलता, आधा ही मिलता है। अतः ऐसी कम्पनीका बंध होना निश्चित ही है। अगर ऐसा हुआ तो हिन्दू एवं अन्योंकी जनसंख्या अस्सी करोड हो जायेगी, जबकि अल्पसंख्यक - समुदाय तेजीसे बढ़ते हुए पचास वर्षोंमें सौ करोड़से उपर निकल जायगा।

स्वामी रामसुखदासजी

नित्य विचारने योग्य प्रश्न

- ❖ मैं कौन हूँ ?
- ❖ कहाँ से आया हूँ ?
- ❖ अन्त में कहाँ जाना है ?
- ❖ मैं क्या कर रहा हूँ ?
- ❖ मैं जो कर रहा हूँ उसका परिणाम क्या होगा ?
- ❖ अन्त में जो वस्तु मेरे साथ जाएगी उसका संचय कर रहा हूँ या नहीं ?
- ❖ मैंने अपने जीवन में अभी तक कितना पुण्य और कितना पाप इकट्ठा किया है ?
- ❖ वास्तव में मनुष्य जीवन का जो कर्तव्य होना चाहिये वो मैं कर रहा हूँ या नही ?
- ❖ सुख क्या वस्तु है ?
- ❖ सुख किसमें है ?
- ❖ सुख का क्या स्थान है ?
- ❖ सुखी कौन है ?

गीता सार

जो हुआ अच्छा हुआ ।
जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है ।
जो होगा वह भी अच्छा ही होगा ।
तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो ?
तुम क्या लाए थे जो तुमने खो दिया ।
तुमने क्या पैदा किया था जो नष्ट हो गया ।
तुमने जो लिया यहीं से लिया ।
जो दिया यहीं पर दिया । जो आज तुम्हारा है
कल किसी और का था ।
परसों किसी और का होगा ।
परिवर्तन संसार का नियम है ।

पंचामृत

१. हम भगवान के ही हैं।
२. हम जहाँ भी रहते हैं, भगवान के ही दरबार में रहते हैं।
३. हम जो भी शुभ काम करते हैं, भगवान का ही काम करते हैं।
४. शुद्ध-सात्विक जो भी पाते हैं, भगवान का ही प्रसाद पाते हैं।
५. भगवान के दिये प्रसाद से, भगवान के ही जनों की सेवा करते हैं।

आशीर्वाद स्पिनफैब एल एल पी

ए/2, 511, पेलेडियम टावर, वोडाफोन हाउस के पास,
कोर्पोरेट रोड, प्रहलादनगर, अहमदाबाद-380015.

मो. 94264 87264, *WWW.ASHIRWADGROUP.NET*

E-mail : tckandoi@gmail.com, tc@ashirwadgroup.net